कार्टिलेज खराब, लेकिन नहीं बदलेगा घुटना

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : उत्तराखंड के राज्य स्तरीय क्रिकेटर जयंत (24) के घुटने में चोट लगने में उनका करियर दाव पर लग गया क्योंकि चोट के कारण वह पैरों पर खड़ा भी नहीं हो पा रहे थे। जांच में पता चला कि चोट के कारण घुटने के ज्वाइंट के बीच मौजूद कार्टिलेज (सफेद चिकनी परत) खराब हो गई थी। ऐसी स्थिति में कृत्रिम घुटना प्रत्यारोपण ही विकल्प होता था। हालांकि, दिल्ली के डॉक्टरों ने उनके ही टिश्यू से लैब में कार्टिलेज विकसित कर उनके घुटने में प्रत्यारोपित कर दिया। इस तकनीक से जयंत का घुटना तो सुरक्षित बच ही गया, वह वापस क्रिकेट के मैदान पर उतरने में कामयाब रहे। बीएलके अस्पताल के डॉक्टर कहते हैं कि यह तकनीक खिलाड़ियों व उम्रदराज लोगों के लिए वरदान साबित हो रही है।

इस तकनीक का फायदा यह है कि कार्टिलेज का थोड़ा हिस्सा खराब होने पर घुटना बदलने की जरूरत नहीं पड़ेगी। अस्पताल के ऑर्थोस्कोपी व स्पोर्ट्स मेडिसिन सेंटर के निदेशक डॉ. दीपक चौधरी ने कहा कि इस तकनीक से देश भर में अब तक 600 मरीजों की सर्जरी हो चुकी है। उन्होंने कहा कि इस तकनीक को चिकित्सा विज्ञान में ऑटोलोगस कॉन्ड्रोसाइट इंप्लांटेशन कहा जाता है। इसमें मरीज को कृत्रिम घुटना लगाने के बजाए प्राकृतिक घुटने को ही संरक्षित कर लिया जाता है। इसकी सर्जरी दो स्टेज में की जाती है। कार्टिलेज घुटने की हड्डी को घिसने से बचाती है। कार्टिलेज खराब होने पर घुटना खराब हो जाता है।

कई मरीजों के कार्टिलेज में खड्डा बन जाता है। यदि कार्टिलेज का पूरा हिस्सा खराब न हो तो मरीज के कार्टिलेज के स्वस्थ हिस्से से थोड़ा टिश्यू लेकर मुंबई स्थित लैब में भेजा जाता है। वहां उस टिश्यू से 400 मिलियन गुना बड़ा कार्टिलेज तैयार कर लिया जाता है, जिसे चार सप्ताह बाद मरीज को प्रत्यारोपित कर दिया जाता है।

उन्होंने बताया कि जयंत के बाएं घुटने में करीब 20 गुणा 16 मिलीमीटर कार्टिलेज खराब हो गई थी। वहां खड्डा बन गया था, जबकि कार्टिलेज का बाकी हिस्सा ठीक था, इससे छोटा टुकड़ा लेकर बड़ा कार्टिलेज तैयार कर उन्हें प्रभावित हिस्से के खड्डे को भर दिया गया। जयंत ने बताया कि सर्जरी के बाद छह सप्ताह उन्होंने आराम करना पड़ा था। इसके बाद क्रिकेट का अभ्यास शुरू कर दिया था। हालांकि, कभी-कभी दर्द होता है पर घुटने के इलाज में कृत्रिम उपकरण इस्तेमाल नहीं हुआ। इसलिए संक्रमण का भी खतरा नहीं है।

सुविधा

- मरीज के टिश्यू से लैब में कार्टिलेज विकसित कर घुटने में कर दिया प्रत्यारोपित
- तकनीक ने उत्तराखंड के क्रिकेटर का घुटना बचाया, अब क्रिकेट भी खेल सकेंगे

बीएलके अस्पताल में आयोजित प्रेसवार्ता में डॉक्टरों के साथ उत्तराखंड के राज्यस्तरीय खिलाड़ी जयंत (कैप पहने हुए)